मेरा पसन्दीदा चित्र

चुप्पा-कस्बा

मनोज कुलकर्णी

इस चित्र का शीर्षक "सायलेंट टाउन" यानी चुप्पा-कस्बा है। इसे भारत के प्रसिद्ध चित्रकार सुधीर पटवर्धन ने बनाया है। इसमें किसी कस्बे की एक गली दिखाई दे रही है। उसके दोनों तरफ छोटे-छोटे कस्बाई मकान हैं – छोटे-छोटे अहातों वाले, टीन और कवेलू की छतों वाले। इनके पीछे कुछ मकान अभी बन रहे हैं। नए बन रहे मकानों में थोड़े कस्बाई हैं और थोड़े शहरी हैं। एकदम पीछे बड़ी-बड़ी इमारतें हैं। किसी बड़े शहर में दिखाई देने वाली ऊँची इमारतों जैसी।

यह चित्र दिखाता है कि एक कस्बा कैसे एक शहर में बदलता है, और फिर एक शहर कैसे एक महानगर में बदल जाता है।

चित्र में एकदम सामने की ओर कुछ बच्चे हैं। चुपचाप खड़े हुए या मुँडेर पर उकड़ू बैठे हुए। वे शायद इस बदलाव को होता देख रहे हैं। शुरू में इक्का-दुक्का पेड़ हैं जो आगे बढ़ने के साथ-साथ नदारद होते जा रहे हैं। क्या इसी तरह हमारे कस्बे धीमे-धीमे, हरियाली को खत्म करते हुए एक महानगर में नहीं बदल रहे हैं? और हम, ठीक चित्र के बच्चों की तरह, बैठे हुए हैं, बिल्कुल चुपचाप!

यह आज की सच्चाई है। आज के विस्थापन के दौर की। अतिक्रमण के दौर की। कैसे शहर, गाँवों पर अतिक्रमण करते हैं? पर, क्या विस्थापन सिर्फ इंसानों का होता है? पेड़-पौधों, चींटियों से भी महीन करोड़ों जीवों से लेकर हमारे पालतू जीवों-पक्षियों तक.... या कहें समूची प्रकृति एक जगह से दूसरी जगह विस्थापित होती है। चित्र इन सब बातों की ओर इशारा करता है। अखबार में तुम्हें लगभग रोज़ ही इस तरह की खबरें पढ़ने को मिल जाती होंगी। विस्थापन ज़्यादातर परियोजनाओं की वजह से होता है। सोचो, अगर तुम्हें अपना घर, मोहल्ला, पक्षी, पेड़-पौधों सबको एक दिन अचानक छोड़कर कहीं और जाने को कहा जाए तो? विस्थापित लोगों के खेत, मकान छिन जाते हैं। रोज़गार छूट जाता है।

पिछले सौ-डेढ़ सौ सालों में दुनिया ने जो भी तरक्की की है, उसका फायदा कुछ ही देशों को मिला है। अधिकतर देश अब भी तंगहाली, भूख, बीमारी और मौत के वातावरण में जी रहे हैं। इस किस्म की असमानताएँ एक ही देश में भी देखने को मिलती हैं। जैसे, हमारे अपने देश के कुछ इलाकों में तो सुविधाओं की भरमार है तो कुछ दलित और आदिवासी बहुल इलाके अब भी बेहद पिछड़े हुए हैं। यानी एक तरफ दिल्ली, मुम्बई जैसे सुविधा-सम्पन्न बड़े शहर हैं तो झाबुआ, बस्तर जैसे अति पिछड़े इलाके भी हैं। शहरों में भी चमकीली इमारतें और महँगे बाज़ार हैं तो झुग्गी-बस्तियाँ भी हैं, जिनमें जीवन की बुनियादी सुविधाएँ तक नहीं हैं।

भारतीय चित्रकला में आज़ादी के बाद जो नामी चित्रकार हुए हैं, उनमें से कईयों ने अपने चित्रों के ज़रिए ऐसे विषयों को उठाया है। भारत में ग्रामीण इलाकों, छोटे किसानों और खेत-मज़दूरों के जीवन को चित्रित करने वाले अनेक प्रसिद्ध चित्रकार, मूर्तिकार रहे हैं। पर, सुधीर पटवर्धन शायद पहले ऐसे चित्रकार हैं जिन्होंने शहरी मज़दूरों की ज़िन्दगी को चित्रकला के ज़रिए दर्शाया है – मिल मज़दूर, घरेलू नौकर, छोटे-मोटे काम करने वाले कारीगर। किस तरह शहर, कस्बों को अपने घेरे में ले रहे हैं और कैसे हमारे आस-पास का वातावरण बदल रहा है, आजकल वे इसका चित्रण कर रहे हैं।

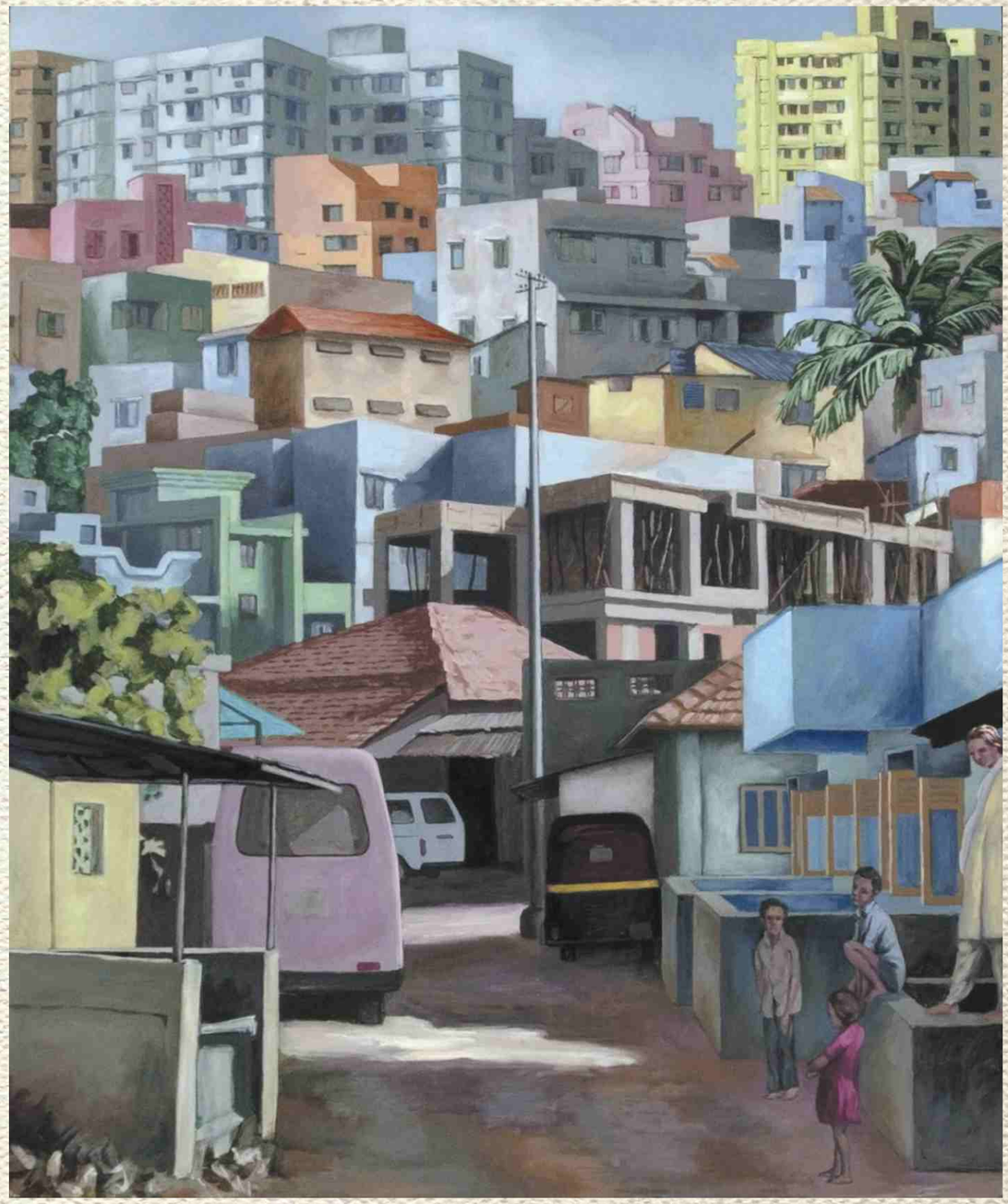

चित्र बनाने की अनेक शैलियाँ और विधियाँ हैं। भारत में आज जो चित्रकार महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं, सुधीर पटवर्धन उनमें एक प्रमुख नाम है। "साइलेंट टाउन" नामक यह चित्र उन्होंने 2007 में कैनवास पर एक्रेलिक रंगों से बनाया है।

यह चित्र यथार्थवादी शैली (रियलस्टिक) में बनाया गया दृश्यचित्र है। पर, यह पूरी तरह फोटो-यथार्थ शैली का चित्र नहीं है। इसमें कलाकार की निजी छाप भी दिख पड़ती है। चाहे वे चित्र में उपस्थित आकृतियों के कपड़ों की सलवटें हों या बालों की लटें, छत के टापरे हों या कवेलू, टेलीफोन का खम्बा हो या पेड़। ब्रश के स्ट्रोक्स का सुन्दर समन्वय वहाँ दिखता है।

चित्र में धूप-छाँव का दिलचस्प चित्रण है। मकानों के बीच से गली में गिरती धूप के टुकड़े, चित्र की गहराई को स्पष्ट करते हैं। चित्रकला में "पर्सपेक्टिव" का बड़ा महत्व होता है। क्योंकि कागज़ या कैनवास की तो केवल लम्बाई और चौड़ाई ही होती हैं, वहाँ तीसरा आयाम यानी गहराई को दिखाने के लिए कलाकार का ज्ञान और कौशल काम आता है। मसलन, पास की वस्तु को बड़ी और दूर की वस्तु छोटी नज़र आएगी। यह चित्र "पर्सपेक्टिव" की कसौटी पर भी एक उम्दा चित्र है।

अक्सर दृश्यचित्रों के तौर पर हमें गाँव, प्राकृतिक स्थलों, नदियों, समुद्र तटों के चित्र ही दिखाई देते हैं। शहरी दृश्यों को चित्रित करने की परम्परा नहीं है। सुधीर पटवर्धन, शहरों की बनक के बदलने को भी दर्ज करने वाले चित्रकार हैं।